कृतारिषड्वर्गजयेन मानवीमगम्यरूपां पदवीं प्रपित्सुना।

विभज्य नक्तन्दिवमस्ततन्द्रिणा वितन्यते तेन नयेन पौरुषम् ॥९॥

अन्वय-

कृतारिषड्वर्गजयेन अगम्यरूपाम् मानवीम् पदवीम् प्रपित्सुना अस्ततन्द्रिणा तेन नक्तं दिवं विभज्य नयेन पौरुषम् वितन्यते॥ ९॥

अर्थ-

(वह दुर्योधन) काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद एवं अहंकार रूप प्राणियों के छहों शत्रुओं को जीतकर, अत्यन्त दुर्गम मनु आदि नीतिज्ञों की बनाई हुई शासन-पद्धति पर कार्य करने की लालसा से आलस्य को दूर भगा पर, रात-दिन के समय को प्रत्येक काम के लिए अलग-अलग करके, नैतिक शक्ति द्वारा अपने पुरुषार्थ को सबल बना रहा है॥ ९॥

टिप्पणी-

तात्पर्य यह है कि दुर्योधन अब वही जुआड़ी और आलसी दुर्योधन नहीं रह गया है। उसने छहों दुर्गुणों को दूर कर स्वायम्भुव मनु ये दुर्गम आदर्शों के अनुरूप अपने को राजा बना लिया है। उसमें आलस्य तो तनिक भी नहीं रह गया है। दिन और रात- सब में उसके पृथक्- पृथक् कार्य नियत हैं। उसके पराकम को नैतिक शक्ति का बल मिल गया है, और इस प्रकार वह दुर्जेय बन गया है। यहाँ परिकर अलंकार है।

सखीनिव प्रीतियुजोऽनुजीविन: समानमानान्सुहृदश्च बन्धुभिः।

स सन्ततं दर्शयते गतस्मय: कृताधिपत्यामिव साधु बन्धुताम् ॥१०॥

अन्वय-

गतस्मय: स: अनुजीविन: प्रीतियुज: सखीन् इव सुहृद: बन्धुभि: समानमानान् इव बन्धुताम् कृताधिपत्याम् इव साधु सन्ततम् दर्शयते ॥१०॥

अर्थ-

वह दुर्योधन अब निरहंकार होकर सर्वदा निष्कपट भाव से सेवा करने वाले सेवकों को प्रीतिपात्र मित्रों की तरह मानता है। मित्रों को निजी कुटुम्बियों की तरह तम्मानित करता है तथा अपने कुटुम्बियों को राज्याधिकारी की भाँति आदर देता है। ॥१०॥

टिप्पणी-

तात्पर्य यह है कि उसमें अब वह पूर्व की तरह अभिमान नहीं रह गया है। वह अत्यन्त उदार हृदय बन गया है। उसने पूरे राज्य में बन्धुता का विस्तार कर दिया है, उसका यह व्यवहार सदा-सर्वदा रहता है, दिखावट की गुंजाइश नहीं है और उसने इस व्यवहार से सब लोग सन्तुष्ट होते हैं। वह ऐसा करके यह दिखाना चाहता है कि मुझमें अहङ्कार का लेशमात्र भी नहीं है। इसमें पूर्णोपमा है।